कक्षा-I

पाठ 1 रामायण–I

पाठ 1 रामायण–II

पाठ 1 रामायण–III

1

रामायण–I

रामायण संस्कृत भाषा में लिख तथा प्राचीन समय का एक महाकाव्य है। रामायण में रावण द्वारा सीता के हरण किये जाने पर राम द्वारा जंगल में रहले वाले अथवा आदिवासियों की सेना की सहायता अपनी प्रियतमा सीता को बचाकर वापस लाने की कहानी है।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे :

- दिये गये श्लोकों का उच्चारण कर पाने में;
- रामायण की कहानी को बता पाने में; और
- राम के धार्मिक गुणों को समझ पाने में।

1.1 मूल रामायण की संक्षिप्त कहानी

दशरथ अयोध्या के राजा थे। उनकी तीन पत्नियाँ तथा चार पुत्र–राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघन थे। राम एक आदर्श और उत्तम पुत्र थे। जो अपने भाईयों के साथ बड़े हुए। जब वो बड़े हुए तो उनकी सीता, जो कि आसपास के राज्य की राजकुमारी थी, के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। भरत की माता का नाम कैकेयी था।

टिप्पणी

कैकेयी ने राम के राज्याभिषेक के समय विरोध प्रकट किया और राजा दशरथ द्वारा उन्हें दिये गये वचन के रूप में राम को चौदह वर्ष का बनवास तथा उनकी जगह अपने पुत्र भरत के राज्याभिषेक की मांग की थी।

इन सब से दुखी राजा दशरथ के पास अन्य कोई रास्ता नहीं था इसलिए उन्होंने राम को बनवास जाने के लिए तैयार कर दिया। राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी उनके पीछे-पीछे जंगल में चले गये। जब वो जंगल पहुँचे तो वहां पर रावण की बहन सूर्पणखा राम पर मोहित हो गई और जब वह सीता को मारने की कोशिश कर रही थी तो लक्ष्मण ने उसको अपने वार से घायल कर दिया। हालांकि वहां पर खर तथा उसकी सेना की राम के हाथों पराजय हुई और उनकी सेना का मात्र एक सिपाही ही जीवित बचा। वह अकेला सैनिक हिपीप राज्य लंका की तरफ भाग गया और उसने सूर्पणखा के भाई रावण से राम से बदला लेने का निवेदन किया। रावण सीता के विषय में पहले से ही जानता था इसलिए उसने उसका हरण करने का निश्चय कर लिया। अपनी चालबाजी और जादू के बल पर राम और लक्ष्मण को सीता से दूर कर पाने में सफल रहा और उसने उसका हरण कर सीता को लंका लेकर आ गया।

राम और लक्ष्मण ने सीता को बहुत दूर-दूर तक खोजा किंतु वे उसे ढूँढ नहीं पाये। आखिर में वो एक वानर समूह के पास आये तथा उनसे सहायता करने का निवेदन किया। उन बहादुर वानरों में से एक 'हनुमान' नामक वानर राम का पक्का भक्त हो गया। वानर सीता की खोज में निकल पड़े और उन्होंने पता लगाया कि सीता को लंका ले जाया गया है। हनुमान ने लंका जाकर सीता के वहाँ होने को सुनिश्चित किया कि वह वहाँ पर कैद है। हनुमान वहाँ सीता से मिले और उन्हें राम के विषय में सूचित किया और उन्हें बचाने के लिए वापस आने का वादा किया। मुख्यभूमि पर वापस आने से पहले हनुमान ने लंका नगरी को आग लगा दी।

राम, लक्ष्मण और वानर सेना ने भारत और लेका के मध्य एक सेतु का निर्माण किया। तदन्तर वे लंका गये जहां पर दो बड़ी सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ। राम ने अंत में रावण को मारकर सीता को मुक्त कराया। तब वे वापस लौटकर अयोध्या आये जहां पर भरत ने उन्हें राज्य लौटा दिया।

रामायण में 24000 श्लोक हैं। संपूर्ण रामायण को समझने के लिए काफी समय चाहिए। फिर भी रामायण की मुख्य घटनाओं को इस स्तर पर 100 श्लोकों के माध्यम से समझाया गया है, जिसके संक्षिप्त में संपूर्ण रामायण है।

इस पाठ सहित आगे के पाँच पाठों में प्रति पाठ 20 श्लोक दिये गये हैं–

1. श्लोक 1 से 20

संत नारद महर्षि बाल्मीकि के पास आते हैं।

riLLokè;k;fujr riLoh okfXonk ojeA
ukjn ifjiçPN okYehfdefui³xoeAA1-1-1AA

नारद मुनि जो कि तपस्या और स्वाध्याय अर्थात् वेदपाठ में निरत और वक्ताओं में श्रेष्ठ है, से वालमीकि जी नू पूछा।

dkUofLeU lkEçr ykd xq.kokUd'p oh;okuA
èkeK'p drK lR;okD;k n<or%AA1-1-2AA

pkfj=.k p dk ;äLloHkr"k dk fgr%A
fo}kUd% dLleFk'p d'pdfç;n'ku%AA1-1-3AA

vkReokUdk ftrØkèkk |frekUdk·ul ;d%A
dL; fcH;fr nok'p tkrjk"kL; l ;xAA1-1-4AA

हे नारद मुनि! संसार में सबसे गुणवान?, बलशाली (वीर्यवान), धर्म के ज्ञाता, कृतज्ञ, सत्य के पालक, दृढनिश्चयवान, उत्तम चरित्रवान, हितैषी, विद्वान, किसी भी कार्य को करने में समर्थ, दर्शनीय, धैर्यवान, अक्रोधवान, तेजस्वी, ईर्ष्या को दूर रखने वाले, क्रोधित होने पर युद्ध में देवताओं को भी भयभत करने वाले कौन हैं।

,rfnPNkE;g Jkr iq dkrgy fg eA
eg"k Ro leFkk·fl Kkreofoèk ujeAA1-1-5AA

हे मुनिवर! ऐसे पुरुष को जानने की मेरी प्रकट इच्छा है और ऐसे पुरुष को आप जानने और बता पाने में समर्थ भी है।

JRok prfR=ykdKk okYehdukjnk op%A
J;rkfefr pkeU=; çâ"Vk okD;ecohrAA1-1-6AA

वाल्मीकि जी के मुख से ये वचन सुनकर तीनों लोकों के ज्ञाता देवर्षि नारद अतिप्रसन्न हुए और कहने लगे।

cgok nyHkk'pò ;s Ro;k dhfrrk x.kk%A
eu o{;kE;g c)ok r;ä'J;rkUuj%AA1-1-7AA

हे मुनिवर वाल्मीकि जी, जिन गुणों की बात आप कर रहें हैं ये सब गुण बहुत ही दुर्लभ हैं परंतु मैं अपनी समझ से ऐसे गुणों से मुक्त पुरुष को आपको बतलाते है। इस विषय में सुनिये....।

b{okdo'kçHkok jkek uke tu'Jr%A
fu;rkRek egkoh;k |freku~ o'khAA1-1-8AA

इश्वाकु वंश में जन्म लेने वाले महाराज भगवान श्रीराम को हम जानते हैं। श्रीराम नियतस्वभाव, बलवान, तेजस्वी और आनन्दमय, सभी गुणों के स्वामी हैं।

cf)ekUuhfrekUokXeh Jheku~ 'k=fucg.k%A
foiyk lk egkckg% dEcxhok egkgu%AA1-1-9AA

egkjLdk eg"okl k x<t=jfjUne%A
vktkuckgL lf'kjkL lyykVL lfoØe%AA1-1-10AA

सब को जानने वाले (सर्वज्ञ), मर्यादावान्, मृदुभाषी, सज्जन, शत्रुविनाशक, विशाल कंधों वाले, बलशाली भुजाओं वाले, जिनकी गर्दन पर शंख की तरह तीन रेखाएं हैं, जिनकी ठोडी बड़ी है, चौडी छाती वाले और विशाल धर्नुधारी हैं। उनकी गर्दन की हड्डियां मांसल हैं और भुजाएं घुटनों को छूती हैं। उनका सिर और मस्तक शोभनीय है और वे बडे ही पराक्रमी हैं।

leL lefoHkäk³xfLLuXèko.k% çrkiokuA
ihuo{kk fo'kkyk{kk y{ehoku~ 'kHky{k.k%AA 1-1-11AA

उनके समस्त अंग न छोटे हैं न बडे अर्थात् यथावत् है। उनके शरीर का रंग बहुत ही साफ है, वे प्रतापी और तेजस्वी हैं। उनके नेत्र बड़े-बड़े हैं और छाती मांसल है। उनके सभी अंग-प्रत्यांग सुन्दर और शुभ लक्षणों से युक्त है।

èkeKL IR; IUèk'p çtkuk p fgr jr%A
;'kLoh Kku IEiUu''kfpo';L I ekfèkeku AA1-1-12AA

वे शरणार्थीक की रक्षा करते हैं, धर्मज्ञ है। दृढप्रतिज्ञ तथा प्रजाा के हितैषी भी हैं। अपने आश्रितों की रक्षा करने में वे कीर्तिप्राप्त है। सर्वज्ञाता है, उपासक के अधीन है अर्थात् भक्ति में उनके मन को जीता जा सकता है और हमेशा ही निज तत्व के चिन्तन-मनन करने वाले है।

çtkifr le'Jheku èkkrk fjiq fu"knu%A
jf{krk thoykdL; èkeL; ifjjf{krk AA1-1-13AA

jf{krk LoL; èkeL; LotuL; p jf{krkA
ononk³xrÙoKk èkuqon p fuf"Br%AA1-1-14AA

वे ब्रह्म (प्रजापति) के समान प्रजा का रक्षण करने वाले, सब के पालक और शोभावान् है। शत्रुविनाशक हैं और धर्म के द्रोही उनके शत्रु हैं। धर्म के प्रवर्तक और उपदेशक हैं, विद्वानों के रक्षक भी है। वह वेदज्ञ और धनुर्विद्या में पारंगत है।

Io'kkL=kFkrÙoKLLef̀reku çfrHkkuoku A
Ioykdfç;L I kèkjnhukRek fop{k.k%AA1-1-15AA

वे शास्त्र ज्ञाता हैं। उनकी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है। प्रतिभावान है, सबके प्रिय परम् सज्जन और दिखावे से दूर रहने वाले हैं। वे धीर ललित, गंभीर और लौकिक तथा अलौकिक क्रियाओं में पारंगत हैं।

lonkfHkxrL lfnHkL leæ bo flUèkfHk%A
vk;Llo le'po Indfç;n'ku%AA1-1-16AA

जिस प्रकार सभी नदियों की पहुँच सागर तक रहती है उसी प्रकार सज्जन लोगों की पहुँच उन तक रहती है। वे सभी वो समान दृष्टि से देखते हैं और सदा प्रियदर्शन है।

l p lox.kksir% dk”kY;kuUnoèku%A
leæ bo xkEHkh;s èk;s.k fgeokfuoAA1-1-17AA

fo".kquk ln'kks oh;s lkeofRç;n'ku%A
dkykfXuln'k% Øksèks {ke;k i`fFkohle%AA1-1-18AA

श्रीराम सभी गुणों को धारण कर माता कौशल्या के आनन्द को बढाने वाले है। सागर की तरह गंभीर है, हिमालय की तरह अटल धैर्यवान हैं, विष्णु की तरह पराक्रमी हैं, चन्द्रमा की तरह प्रिय दर्शन युक्त हैं, कालाग्नि के समान क्रोधवान भी हैं तथा क्षमाशीलता में पृथिवी के समान हैं।

èkunnu leLR;kx lR;s èkeZ bokij%A
reso x.klEiUua jkea lR;ijkØeeAA1-1-19AA

कुबेर के समान दानदाता हैं, सत्य भाषण में मानों एक धर्म की तरह हैं। ऐसे सभी गुणों से युक्त भगवान श्रीराम सत्यपराक्रमी है।

T;s"Ba J"Bx.ks;qäa fç;a n'kjFkL lreA
çd`rhuka fgrS;qäa çd`frfç;dkE;;kAA1-1-20AA

इस तरह के श्रेष्ठ गुणों से युक्त प्रजाहितैषी श्रीराम चन्द्र जी को, प्रजा के हित को ध्यान में रखकर महाराज दशरथ ने प्रेमपूर्वक युवराज पद देना चाहा।

पाठगत प्रश्न 1.1

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

1. अयोध्या पर राजा ..... का शासन था।
2. ..... ने सीता का हरण कर उसे श्रीराम से दूर ले गया।
3. वानरों में ..... भगवान राम के बडे भक्त थे।
4. अयोध्या का साम्राज्य ..... ने श्रीराम को लौटा दिया।

आपने क्या सीखा

राम जो कि अयोध्या के युवराज थे वो अपने भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ वन में चले जाते है। उनकी माता कैकेयी द्वारा वर रूप में दशरथ से उनके लिए 14 वर्ष का वरवास मांगा था। वन में रावण द्वारा सीता का हरण कर लिया जाता है। राम जंगल के निवासियों की एक सेना बनाते है और लंका पर आक्रमण कर रावण का वध करके सीता को वापस लाते हैं। इस पाठ में आपने राम की विशेषताओं के विषय में भी जाना।

पाठांत प्रश्न

1. रामायण की कहानी को संक्षिप्त में लिखिए।
2. रामायण की कहाने से क्या शिक्षा मिलती है।
3. रामायण में राम की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है।

उत्तरमाला

1.1 I. 1. दशरथ

2. रावण
3. हनुमान
4. भरत